32

''मसीह में दण्ड की आज्ञा नहीं''

(8:1-4)

हम ''बाइबल के एक महान अध्याय,''[1] वचन अर्थात रोमियों 8 के ''सबसे प्रसिद्ध, सबसे प्रिय अध्यायों में से एक''[2] पर आ गए हैं। रोमियों 7 में से रोमियों 8 में आना अंधकार में से प्रकाश में आने की तरह है, सर्द ऋतु के गरजमय तूफ़ान में से बसंत के सुन्दर दिन के जाने की तरह है। रोमियों की पुस्तक को एक सुन्दर अंगूठी की तरह पसन्द किया जाता है, जिसमें अध्याय 8 अंगूठी में लगा हीरा है और आयत 28 उस हीरे की चमक है।[3]

अपनी रूपरेखा में हम एक नये विषय ''महिमा मिलना'' पर आ रहे हैं। ''महिमा'' और ''महिमा पाए'' शज़्द रोमियों 8 में चार बार मिलते हैं:

> ... यदि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ *महिमा* भी पाएं (आयत 17)।
>
> ज़्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और ज़्लेश उस *महिमा* के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं (आयत 18)।
>
> ... सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की *महिमा* की स्वतन्त्रता प्राप्त करेगी (आयत 21)।
>
> ... फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें *महिमा* भी दी है (आयत 30)।

परन्तु याद रखें कि पौलुस ने अचानक एक विषय को पूरा करके दूसरा विषय आरज़्भ नहीं किया। अध्याय 8 का आरज़्भ विचार की रेखा को जारी रखता है। आयत 4, 13 यहां तक कि आयत 17 में से देखते हुए भी हम पवित्र किए जाने के विषय पर विचार कर सकते हैं। पौलुस ने मसीही लोगों को पवित्र जीवन बिताने के लिए प्रोत्साहित करना जारी रखा। इसके साथ ही आयत 1 से ही प्रेरित ने उन कुछ महिमामय आशिषों का परिचय दिया जो अनन्तकाल के बाद में मिलने वाली आशिषों के साथ हम मसीही होने के कारण इस समय पा रहे हैं। इस कारण ''महिमा दिया जाना'' शज़्द को सही ढंग से पूरे अध्याय पर लागू किया जा सकता है।

इस पाठ में अध्याय 8 की पहली चार आयतों पर ही विचार किया जाएगा। इस भाग में 7:1 में आरज़्भ हुई व्यवस्था पर चर्चा होती है (देखें लूका 8:2, 3, 4)। इसमें 6:1 (या कहें कि 4:1) में आरज़्भ हुआ विचार चरम को पहुंचता है और अध्याय 8 में बने कई महत्वपूर्ण विषयों का परिचय देता है।

ईश्वरीय प्रतिज्ञा (8:1, 2)

आशीष जिसके योग्य नहीं थे

रोमियों 7:14-25 में व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध के अधीन सिद्ध जीवन बिताने की कोशिश करने वाले के संघर्ष को दिखाया गया। पौलुस ने 7:24 में ऐसी प्यास की व्यर्थता बताई: "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" 7:25 में उसने अपने ही प्रश्न का उज़र दिया: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो [मैं छूट सकता हूं]!" अध्याय 8 का आरज़भ "सो" से होता है, जो इस बात का संकेत है कि पौलुस अपने विचार को जारी रख रहा था।

आयत 1 में पौलुस ने कहा, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।" यह अद्‌भुत प्रतिज्ञा महत्वपूर्ण शज़्दों और वाज़्यांशों से पैक है। पहले तो मुज़्य शज़्द "दण्ड" को देखें: अब ... *दण्ड* की आज्ञा नहीं। इस शज़्द का अनुवाद *katakrima* (*krima*, अर्थात "न्याय" का मज़बूत रूप) से किया गया है। लियोन मौरिस ने लिखा कि यह "अदालती [कचहरी का] शज़्द है, जिसमें यहां वाज़्य और वाज़्य का सज़्पादन 2:9 में सज़्मिलित है।"[4] इस आयत में "दण्ड" का अर्थ *आत्मिक* दण्ड है।

छोटे शज़्द "है" को नज़रअंदाज़ न करें, "अब ... दण्ड की आज्ञा नहीं है।" यह भविष्यकाल में नहीं बल्कि वर्तमानकाल में है यानी भविष्य की प्रतिज्ञा नहीं, बल्कि वर्तमान की प्रतिज्ञा है। भविष्य का न्याय (*krima*) दुष्टों की प्रतीक्षा करता है (देखें लूका 20:47), परन्तु इस बात का अपना अर्थ है, जिसमें यीशु को ठुकराने वाले लोगों का न्याय पहले ही हो गया है (देखें यूहन्ना 3:18; *krino* अर्थात "न्याय करना" से)। पौलुस मसीही लोगों को यह अच्छी खबर बता रहा था कि उनके लिए न्याय उठा लिया गया था! मेरे भाई ने इसे एक रूपक से दिखाया है:

> सज़ा हटा दी गई थी! किसी और ने पहले ही दण्ड चुका दिया था! हमने सुना था कि "दोषी ठहरा।" हम उस भयानक दिन की प्रतीक्षा करते हुए, मृत्यु की कतार में बैठे थे जब दण्ड लागू होना था। फिर यह स्वागत योग्य समाचार मिला कि "तुम छूट गए हो!" और अब हम अपने पापों के दण्ड के अधीन नहीं रहे।[5]

फिर पौलुस की पसंदीदा व्यज़्तियों में से एक "मसीही यीशु में" पर विचार करें: "... जो *मसीह यीशु में,* उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।" यह रोमियों 6:3 में पीछे ले जाता है, जहां पौलुस ने कहा कि हमने "मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है।" एफ़. एफ़. ब्रूस ने लिखा है:

> "मसीह यीशु में" (या "मसीह में") नये प्रबन्ध का जिसमें मसीह में भरोसा करने पर पुरुषों और स्त्रियों को लाया जाता है, पौलुस का विवरण है। मसीही बपतिस्मा "मसीह यीशु में" बपतिस्मा है; उसके साथ विश्वास की एकता से उसके लोग उसके साथ मरने के लिए मिलाए जाते हैं, उसके साथ गाड़े गए हैं और उसके साथ जी उठे हैं।[6]

अन्त में "अब" शज़्द पर ध्यान दें: "सो *अब* ... दण्ड की आज्ञा नहीं।" 7:14-25 में पौलुस

''तब'' अर्थात अतीत के समय की बात कर रहा था जब वह अपनी ही सामर्थ पर भरोसा रखकर व्यवस्था की पालना करने की कोशिश कर रहा था। *तब* वह दोषी ठहरता था ज़्योंकि वह व्यवस्था को पूरी रीति से नहीं मान सकता था। परन्तु अब वह स्थिति नहीं थी ज़्योंकि पौलुस ने मसीह में विश्वास किया था और बपतिस्मा ले लिया था; उसे परमेश्वर के अनुग्रह से बचा लिया था। *अब* वह दोषी नहीं था।

इन सब शब्दों और वाक्यांशों को एक साथ और यह परमेश्वर के हर विश्वासी बालक को दिया गया आश्वासन है: ''सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (8:1)। हम में से कोई भी इस आश्वासन का अधिकारी नहीं है, परन्तु हम सब को इसकी आवश्यकता है।

इतना महत्वपूर्ण संतुलन

अफ़सोस की बात है कि रोमियों 8 के अन्य वचनों के साथ आयत 1 का यह सिखाने के लिए दुरुपयोग हुआ कि परमेश्वर के बालक के लिए खोना असम्भव है। जब कैल्विनवादी लेखक रोमियों 8:1 पर टिप्पणी करते हैं, तो उनके लिए यह कहना आम बात है कि ''इस वाक्य के लिए कोई योग्यता नहीं है'' या यह कि ''कोई शर्त नहीं दी गई।'' किसी आयत को उसके संदर्भ से बाहर लेना हमेशा गलत रहा है। एक बार एक आदमी ने जो इस विचार को मानता था कि मसीही लोग खो नहीं सकते, सुसमाचार प्रचारक ग्लेन पेस को यह कहते हुए चुनौती दी, ''किसी ने मुझे बताया है कि आप यह मानते हैं कि मसीह में दण्ड की आज्ञा *है* !'' यह जानते हुए कि वह रोमियों 8 की बात कर रहा था, भाई पेस ने उसे बताया, ''आपने पूरा नहीं पढ़ा है। पूरा पढ़ें !''[7]

KJV में 8:1क की प्रतिज्ञा के तुरन्त बाद यह योग्यता दी गई है: ''जो शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं'' (आयत 1ख)। प्राचीन हस्तलेखों में आयत 1 में ये शब्द नहीं मिलते, परन्तु आयत 4 तक नीचे को देखें तो आप उन्हें वहां पाएंगे: ''जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं'' (आयत 4ख)। तथ्य यह है कि रोमियों 8 में योग्यता की शर्तों की कमी नहीं है। उस पर निशान लगाते हुए जिसे ''भाषा में सबसे छोटा'' शब्द कहा गया है।[8] अंग्रेज़ी में यह शब्द ''if'' है।[9] उदाहरण के लिए आयत 13 में देखें: ''*यदि* तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, *यदि* आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे।''

आपको रोमियों 8 के सही संतुलन को समझने की आवश्यकता है। हमें इस आयत को उससे *बढ़कर* कहलवाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो यह कहती है। पौलुस का उद्देश्य यह सिखाना नहीं था कि मसीही व्यक्ति कभी दोषी नहीं हो सकता, चाहे उसका जीवन कैसा भी हो। इसके साथ ही हम वचन से उससे *कम* कहलवाने का साहस नहीं कर सकते जो यह कहता है। मसीही व्यक्ति की *सुरक्षा* पर यह अद्भुत वचन है। यह *सशर्त* सुरक्षा है; तौभी यह सुरक्षा है।

मसीही सुरक्षा के मामले में कई-कई लोगों के कम से कम तीन विचार पाए जाते हैं।[10] पहले विचार मैं ''शर्त रहित सुरक्षा'' करता हूं। यह ''विश्वास त्याग की *असम्भावना*'' की प्रसिद्ध शिक्षा है। यह सिखाती है कि परमेश्वर का बालक कभी गिर *नहीं* सकता। डग्लस जे मू ने ध्यान दिलाया कि ''ज़िम्मेदारी के बिना सुरक्षा निष्क्रियता को जन्म देती है।'' उसने कलीसिया के एक अगुवे को सलाह देने के बारे में बताया, जिसके अपनी पत्नी के अलावा किसी दूसरी स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध थे। उस व्यक्ति ने अपने कामों पर कोई चिंता व्यक्त नहीं की; वह अपने आपको ''मसीह

में सदा के लिए सुरक्षित'' मानता था।[11] परमेश्वर का वचन ''शर्त रहित सुरक्षा'' की शिक्षा *नहीं* देता। परमेश्वर का वचन विश्वास से गिरने के विरुद्ध चेतावनी देता है (1 कुरिन्थियों 10:12), गिरने से बचने का ढंग बताता है (2 पतरस 1:5-10) और बताता है कि यदि कोई गिर जाए तो ज़्या करना है (प्रेरितों 8:22, 23)।

दूसरी स्थिति को मैं ''सशर्त सुरक्षा'' कहता हूं। इसे ''विश्वास त्याग की *सज़्भावना*'' की डॉज़्ट्रिन का नाम दिया जा सकता है। इस विचार को मानने वालों का विश्वास है कि परमेश्वर का बालक गिर *सकता* है और सज़्भवतया गिर *जाएगा*। पता नहीं कि वास्तव में यह शिक्षा कौन देता है, परन्तु मैं कलीसिया के ऐसे लोगों को जानता हूं जो स्पष्ट रूप से इस पर विश्वास करते हैं। उन्हें परमेश्वर को एक विश्वव्यापी पुलिसवाले के रूप में सोचना अच्छा लगता है, जिसका मुज़्य ध्यान ईश्वरीय व्यवस्था के उल्लंघन में पकड़ना है। उन्हें मसीही जीवन में इतना आनन्द नहीं मिलता वे इस आशा को पकड़े रखते हैं कि हो सकता है, ज़्या पता उन्हें स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति मिल जाए।

अपने ही ढंग से ''सशर्त सुरक्षा'' ''शर्त रहित सुरक्षा'' की तरह ही भ्रमित करने वाली है। मसीहियत का यह विचार मसीहियत के आनन्द को निकालकर प्रभु द्वारा किए गए काम को अलग कर देता है। यह किसी के खोए होने में भी योगदान दे सकता है: किसी के लिए इतना निराश होना सज़्भव है कि वह मसीही के रूप में जीने की कोशिश करना ही छोड़ दे। यह कहने के बाद कि ''बिना ज़िज़्मेदारी के सुरक्षा निष्क्रियता को जन्म देती है,'' मू ने जोड़ा, ''परन्तु सुरक्षा के बिना ज़िज़्मेदारी चिंता की ओर ले जाती है।''[12] पौलुस ने एक भाई के विषय में लिखा जिसने काम किया था और वह ''बहुत उदासी में'' था (2 कुरिन्थियों 2:7)।

तीसरी स्थिति जिसे मैं वचन के अनुसार मानता हूं, को मैं ''सशर्त सुरक्षा'' का नाम देता हूं। यह ''विश्वासत्याग की *सज़्भावना*'' की शिक्षा देती है परन्तु कहती है कि परमेश्वर का बालक गिरेगा *नहीं-यदि*। मसीही व्यज़्ति सुरक्षित है *यदि* वह ''शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार'' चले (रोमियों 8:4), ''*यदि* [वह] आत्मा से देह की क्रियाओं को मारे'' (आयत 13ख)।

ज़्या आपको लगता है कि परमेश्वर आप को दोषी ठहराने का कारण ढूंढ़ रहा है? आगे आयत 31 में देखें: ''यदि [ज़्योंकि] परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' परमेश्वर आप की ''ओर'' है! वह आपके पक्ष में है!

ज़्या मसीही व्यज़्ति परमेश्वर के मार्ग को ठुकरा सकता है? हां। मसीही बनने का अर्थ यह नहीं है कि व्यज़्ति की अपनी स्वतन्त्र इच्छा नहीं रही। यदि कोई मसीह के पास आकर उद्धार पा सकता है, तो वह उससे दूर जाकर खो भी सकता है। मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि कोई ऐसा ज़्यों करना *चाहेगा,* परन्तु फिर मुझे समझ नहीं आता कि बहुत से लोग ऐसा ज़्यों करते हैं। लोग उसे जो उनसे प्रेम करता है ठुकराने सहित रोज़ मूर्खतापूर्ण काम करते हैं। परन्तु *आपके* जीवन में ऐसा नहीं होना चाहिए। जब तक आपका मन परमेश्वर पर लगा है (देखें आयत 6), आप सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। शांति का यह वचन आपके लाभ के लिए लिखा गया था: ''सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (आयत 1)!

इतना आवश्यक लाभ

पौलुस *किस* आधार पर कह पाया "अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं"? आयत 2 पढ़ें: "ज़्योंकि [*gar,* के लिए कारण दिखाते हुए] जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे[13] पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया।"

आयत 2 में पौलुस ने गौण अर्थ में "व्यवस्था" (*nomos*) का इस्तेमाल जारी रखा, जिसका अर्थ "नियम" या "स्थापित परिवर्तित" है। अध्याय 7 इस विचार पर समाप्त होता है कि जब तक पौलुस अपनी सामर्थ पर निर्भर था तब वह "पाप की व्यवस्था" करने को विवश था (7:25ख)। शरीर की न रुक पाने वाली कशिश आत्मिक "मृत्यु" की ओर ले जाती है (देखें 7:6, 24; 8:13), परन्तु पौलुस ने कहा कि वह (और अन्य लोग) "पाप और मृत्यु की व्यवस्था" से छूट गए थे।[14]

पौलुस को किसने छुड़ाया? "जीवन के आत्मा की व्यवस्था।" "जीवन का आत्मा" पवित्र आत्मा को कहा गया है, यानी परमेश्वर का आत्मा जो जीवन देता था।

- आदि में, परमेश्वर के आत्मा में शारीरिक जीवन को स्थिर में लाने में योगदान दिया था (उत्पत्ति 1:1, 2, 26; 2:7; AB)।
- पवित्र आत्मा ने "जीवन का वचन" देने की प्रेरणा दी (फिलिप्पियों 2:16; देखें 2 पतरस 1:21)।
- लोगों को आत्मिक जीवन देने में पिन्तेकुस्त के दिन देने वाली ज़बर्दस्त शक्ति पवित्र आत्मा ही था (देखें प्रेरितों 2:1–4, 33, 37, 38, 41)।
- मसीह में मसीही व्यक्ति के नये जीवन में मुख्य कारक पवित्र आत्मा ही बना रहता है (देखें प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:6)।

इस प्रकार हमें पवित्र आत्मा का परिचय दिया जाता है जो रोमियों 8 में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जीवन के आत्मा की व्यवस्था [नोमोस] क्या है जो हमें स्वतन्त्र करती है? कइयों का मानना है यहां *nomos* ("व्यवस्था") का इस्तेमाल प्राथमिक अर्थ में और आत्मा द्वारा प्रकट किए सुसमाचार (या नया नियम) के लिए है।[15] इस संदर्भ में सम्भवतया *nomos* की व्याख्या गौण अर्थ में जारी रखना बेहतर है। फिर वचन कहता है कि आत्मा का *ऊपर को खींचना* हमें शरीर के न सह पाने वाले *नीचे को खींचने* से छुड़ाता है।

मैं इसे समझाने की कोशिश करता हूं। हम "गुरुत्वाकर्षण के नियम" अर्थात संसार भर में नीचे की ओर खींचने से परिचित हैं, जो हमें पृथ्वी की ओर नीचे को रोकता और हमें आकाश में घूमने से बचाता है। परन्तु "वायुगति विज्ञान का नियम" भी है। इसका सम्बन्ध पंख के नीचे बहने वाली हवा से है, जो हवाई जहाज़ के इंजनों से आगे की ओर चलने पर ऊपर की ओर दबाव बनाती है। मुझे इस नियम की हर बात की समझ नहीं है, परन्तु मैं इतना जानता हूं कि इस नियम को लागू करने से हवाई जहाज़ बनाना सम्भव हुआ है, जो पृथ्वी से ऊपर उठकर आकाश में ऊंचे उड़ते हैं। एक अर्थ में वायु गति विज्ञान के नियम ने मनुष्य को गुरुत्वाकर्षक के नियम से स्वतन्त्र कर दिया है।

मेरा दो साल का नाती एलाइजा हवाई जहाज़ों से बड़ा आकर्षित होता है। हमारा घर मिडवेस्ट सिटी, ओज़्लाहोमा के टिंकर एयरफोर्स बेस पर आने वाले जहाज़ों के उड़ने के मार्ग के निकट ही है। मौसम अच्छा होने पर शाम के समय एलाइजा और मैं जहाज़ उतरते देखते हैं। हमारे दृष्टिकोण से ये विशाल वायु सेना के जहाज़ इतनी धीमी गति से चलने लगते हैं कि यह समझना कठिन है कि वे हवा में कैसे चलते हैं। इसके साथ ही मैं इस बात को समझता हूं कि वायुगति विज्ञान का नियम काम कर रहा है, जिससे वे गुरुत्वाकर्षण के नियम को चुनौती देते हैं।

रोमियों 7 के अंतिम भाग में पौलुस ने शरीर के नीचे की ओर खींचने को ऐसे दिखाया जैसे वह अपने आप पर हावी होने में असमर्थ हो। यहां उसने हमें आश्वस्त किया कि शरीर के नीचे की ओर खींचने को आत्मा के ऊपर की ओर खींचने से बदला जा सकता है, जो हमें बपतिस्मा देने के समय दिया गया था (प्रेरितों 2:38; 5:32)।

ज़्या इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे "जीवन के आत्मा की व्यवस्था" द्वारा हमें "स्वतन्त्र किए जाने" पर "पाप और मृत्यु की व्यवस्था" खत्म हो जाती है? हवाई जहाज़ के उदाहरण पर फिर से विचार करें। ज़्या गतिविज्ञान द्वारा जहाज़ को गुरुत्वाकर्षण के नियम से स्वतन्त्र करने पर वह नियम खत्म हो जाता है? यदि पायलट जहाज़ के इंजन को बन्द कर दे, तो जल्दी ही उसे पता चल जाएगा कि गुरुत्वाकर्षण का नियम अभी भी है! इसी प्रकार पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छूटने का अर्थ यह नहीं है कि नीचे की ओर खींचना बन्द हो जाता है। इसके बजाय इसका अर्थ यह है कि एक मसीही व्यज़्ति के लिए अब यह *अप्रतिरोध्य* खींच नहीं रहा। पाप में अब *हमारी इच्छा के विपरीत* हम पर कोई शज़्ति नहीं रही। परमेश्वर के आत्मा की सहायता से हम "शरीर के कामों को मार" सकते हैं (8:13; देखें 8:26क)।

ईश्वरीय उपाय (8:3)

यह हमें 3 और 4 आयतों पर ले आता है। उन आयतों में "व्यवस्था" शज़्दों पर ध्यान दें। व्यवस्था के लिए दोनों जगह NASB को Law का "L" बड़ा किया गया है, जो इस बात का संकेत है कि ध्यान अब मूसा की व्यवस्था पर है। यहां पौलुस की बातें सीधे तौर पर अध्याय 7 में व्यवस्था की उसकी चर्चा से जुड़ी हैं। 3 और 4 आयतों को 7:14-25 में विचार की उसकी रेखा के निष्कर्ष के रूप में देखा जा सकता है।

व्यवस्था जो नहीं कर पाई

आयत 3 का आरज़्भ होता है, "ज़्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी ..." (आयत 3क)। व्यवस्था पौलुस को पाप और मृत्यु की व्यवस्था से नहीं छुड़ा पाई।[16] ज़्यों? ज़्योंकि यह "शरीर के कारण दुर्बल" थी। इस बात को समझें कि पौलुस यह नहीं कह रहा था कि व्यवस्था अपने आप में कमज़ोर थी, ज़्योंकि यह तो परमेश्वर द्वारा दी गई थी, बल्कि वह सामग्री जिसके साथ इसे काम करना था शरीर होने के कारण कमज़ोर हो गई। शारीरिक मनुष्यजाति यानी अपने ही मानवीय संसाधनों पर निर्भर लोग व्यवस्था को पूरी तरह नहीं मान पाए। इस कमज़ोरी के कारण व्यवस्था मनुष्य जाति को स्वतन्त्र करने में अयोग्य थी। कई उदाहरण ध्यान में आते हैं:[17]

- निराश और घबराए हुए बच्चों के एक दल को विजयी टीम में बदलने की कोशिश करता एक अनुभवी कोच।
- एक प्रतिभाशाली संगीतकार के सामने जवान लोगों का बैंड बनाने के काम जिनमें संगीत की कोई प्रतिभा और रुचि नहीं है।
- एक कुशल कारीगर को गली हुई लकड़ी के टुकड़ों से फर्नीचर का एक सुन्दर टुकड़ा बनाने के लिए कहा जाना।

इन उदाहरणों में दोष कोच, संगीतकार या कारीगर का नहीं है; इसके विपरीत उनमें से हर व्यक्ति दोषपूर्ण संसाधनों से काम करने का प्रयास कर रहा है। इसी प्रकार व्यवस्था "शरीर" द्वारा सीमित थी। ज़्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था में कोई खराबी थी? नहीं। डेव मिलर ने पूछा, "ज़्या आप बाहर जाकर अपनी कार को इसलिए ठोकर मारते हैं कि यह उड़ नहीं सकती? बेशक नहीं। इसे उड़ने के लिए नहीं बनाया गया था। मूसा की व्यवस्था पाप को मिटाने के लिए कदाचित नहीं बनाई गई थी। इसे पाप को प्रकट करने के लिए बनाया गया था, न कि पाप को मिटाने के लिए।"[18]

परमेश्वर ज़्या कर सकता था (और उसने ज़्या किया)

जो कुछ व्यवस्था *नहीं* कर सकी वह परमेश्वर ने किया। व्यवस्था लोगों को शरीर के *कारण* छुड़ा नहीं सकी; परमेश्वर ने लोगों को शरीर *का इस्तेमाल करते हुए* स्वतन्त्र किया। "ज़्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी" (आयत 3)। परमेश्वर ने "पाप पर उसी क्षेत्र अर्थात 'शरीर' में विजय पाई जहां लगता था कि इसके शासन को चुनौती नहीं दी जा सकती।"[19]

आयत 3 में नये नियम की कई मूल शिक्षाएं या डॉक्ट्रिनल हैं। उदाहरण के लिए इसमें मसीह के देह धारण करने की बात है: परमेश्वर ने "अपने ही पुत्र को[20] पापमय शरीर की समानता में" भेजा (आयत 3ख)। अनुवादित शब्द "समानता" (*homoioma*) "समान" या "वैसा ही" (*homo*) के लिए शब्द से लिया गया है। यूनानी धर्मशास्त्र में "पापमय शरीर" पूर्णतया "पाप का शरीर" है। आत्मा की अगुआई में इन तीनों शब्दों का चयन बड़ी सावधानी से किया। ब्रूस ने लिखा है:

> "शरीर की समानता में" अपने आप में निराकारवादी *(docetic)* है;[21] यह सुसमाचार का सार है कि परमेश्वर का पुत्र "शरीर में आया" न कि केवल "शरीर की समानता में।" पौलुस ने "शरीर में" कहा होगा परन्तु वह यह ज़ोर देना चाहता था कि मानवीय शरीर उस क्षेत्र में था जिसमें पाप ने अपने पैर जमा लिए थे और परमेश्वर के अनुग्रह के निकट आने तक सज़ा पा ली थी। इस प्रकार वह केवल "शरीर" नहीं बल्कि "पाप का शरीर" या "पापमय शरीर" कहता है। परन्तु यह कहना कि परमेश्वर का पुत्र "पापमय शरीर में" आया यह अर्थ दे सकता है कि उसमें पाप था, जबकि (जैसे पौलुस ने कहीं और लिखा है) वह "पाप से अज्ञात था" (2 कुरिन्थियों 5:21)। इस प्रकार [मसीह] को "पापमय शरीर की समानता में" भेजे गए के रूप में वर्णित किया गया है।[22]

यदि हमें यीशु के शरीर को परखने का अवसर मिलता तो हम उसे *वैसा* ही शरीर पाते जैसा आपका और मेरा है[23] यानी नीचे को खींचने वाला शरीर। हमारे *विपरीत* (परमेश्वर का धन्यवाद हो!) यीशु उस नीचे को खींचने से झुका नहीं!

परमेश्वर ने अपने पुत्र को केवल संसार में भेजा ही नहीं, बल्कि उसने उसे "पापबलि होने के लिए" भेजा (आयत 3ग)। NASB में "पापबलि होने के लिए" को इटैलिक किया गया है जो इस बात का संकेत है कि शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़े गए हैं। मूल धर्मशास्त्र में केवल *peri* ("के सम्बन्ध में") *hamartia* ("पाप") है। परन्तु यह शब्दावली यूनानी पुराने नियम (सप्तति अनुवाद) में पापबलियों को दर्शाने के लिए इस्तेमाल की गई थी (देखें भजन संहिता 40:6)।

"पाप बलि" वाक्यांश पुराने नियम के समय में पापबलियों के रूप में मारे जाने वाले जानवरों का स्मरण दिलाता है। "बलिदान किए गए पशु की मृत्यु पाप की गम्भीरता का प्रतीक थी यहां तक कि यह परमेश्वर द्वारा अपनी व्यवस्था को तोड़ने के दण्ड को दूसरे पर डालने की इच्छा का संकेत था। ... किसी निर्दोष पशु से परमेश्वर जो संकेत देता था वह उसने अपने पुत्र के निर्दोष लहू से पूरा किया।"[24] "यह अनहोना था कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर" करता (इब्रानियों 10:4); परन्तु जो काम पशुओं का लहू नहीं कर पाया वह सबके लिए एक ही बार मसीह के बलिदान ने कर दिया (इब्रानियों 10:10)।

परिणाम पर विचार करें: परमेश्वर ने "शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी" (रोमियों 8:3घ)। चार्ल्स स्पर्जन आनन्दित था कि "परमेश्वर ने मुझे दण्ड दिए बिना मुझे दण्ड देने का रास्ता निकाल लिया!"[25] पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने "शरीर में" पाप को दण्ड दिया, परन्तु एक सवाल है कि "शरीर" यीशु के शरीर को कहा गया है या हमारे शरीर को। यदि उसके कहने का अर्थ *हमारा* शरीर था तो वह यह दिखा रहा था कि शरीर को खींचने के लिए रोकने की यीशु की योग्यता हमें दोषी ठहराती है क्योंकि हमने उस खींच के सामने हार मान ली है। अधिक सम्भावना यह है कि "शरीर" का अर्थ *यीशु का* शरीर है। यदि ऐसा है तो यह शब्द सम्भवतया पाप के दण्ड (न्याय) के लिए है जो क्रूस पर शारीरिक तौर पर लटकने के समय यीशु पर पड़ा था (1 कुरिन्थियों 15:3; 2 कुरिन्थियों 5:21)। मसीह का शरीर बनना हमारे छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना का बेजोड़ भाग था। मनुष्यजाति के "छुटकारे के रूप में" अपने आपको देने के लिए (1 तीमुथियुस 2:6) मसीह का मनुष्य बनना आवश्यक था। शरीर में पाप को दण्ड देने के लिए यीशु के लिए शरीर बनाना आवश्यक है।

यह परमेश्वर का "ईश्वरीय उपाय" है। कितना अद्भुत है कि परमेश्वर ने "अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया" (रोमियों 8:32)।

ईश्वरीय उद्देश्य (8:4)

ईश्वरीय उद्देश्य: यह क्या है?

इस अद्भुत उपाय का उद्देश्य निश्चय ही हमें पाप से बचाना था, परन्तु इससे भी बढ़कर। पौलुस का संदेश कि उस उपाय का हमारे *जीवनों* पर क्या प्रभाव होना चाहिए। याद रखें कि हम *पवित्र किए जाने* अर्थात धर्मी ठहराए जाने के बाद *जीने* के विशेष ढंग की आवश्यकता पर चर्चा

कर रहे हैं। आयत 4 में पौलुस ने एक मूल कारण बताया कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को ज़्यों भेजा: ''इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।'' ''विधि'' का अनुवाद रोमियों की पुस्तक में बहुतायत में पाए जाने वाले शब्दों *dikai* में से एक (''धार्मिकता'' परिवार में) *dikaioma* से किया गया है। *Dikaioma* का मूल अर्थ है ''धार्मिकता की साकार अभिव्यक्ति।''[26]

जब पौलुस ने ''व्यवस्था की विधि'' को ''हम में पूरी होने की बात की'' उसका ज़्या अर्थ था? उसके दिमाग में हमारे द्वारा मूसा की व्यवस्था की सब आज्ञाओं को मानने की बात की थी; पहले उसने कहा था कि हम उस व्यवस्था के लिए मर चुके हैं और इसलिए उससे छूट गए हैं (देखें 7:4, 6)। सम्भवतया वह इस तथ्य की बात कर रहा था कि हमारे विश्वास करने पर, परमेश्वर हमारे साथ ऐसे व्यवहार करता है *जैसे* हम में व्यवस्था की विधियां पूरी हो गई हों। परन्तु पौलुस के मन में सम्भवतया कुछ और था।

वचन के दो तथ्यों पर ध्यान दें। पहले तो यह कि ''विधि'' एक वचन में है न कि बहुवचन में। (कुछ अनुवादों में बहुवचन ''विधियां'' है, परन्तु यूनानी शब्द एक वचन में ही है जैसे NASB में संकेत मिलता है।) दूसरा पौलुस विधि के हमारे *द्वारा* पूरी होने की बात नहीं, बल्कि हम ''*में*'' (*ev*) पूरी होने की बात कर रहा था। अधिक सम्भावना यही है कि पौलुस कह रहा था कि परमेश्वर के अनुग्रहकारी उपाय ने उस उद्देश्य की पूर्ति सम्भव बनाई जिसके लिए पहले स्थान पर व्यवस्था दी गई थी।[27] जे. डी. थॉमस ने सुझाव दिया कि पौलुस के मन में ''वह उद्देश्य या लक्ष्य था जिसकी ओर मूसा की व्यवस्था ले गई, परन्तु उद्देश्य या लक्ष्य उस प्रकार के कार्यक्रम के अधीन कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता था।''[28]

''व्यवस्था की विधि'' ज़्या *थी*? यह ज़्या पूरा करने के लिए दी गई थी? यदि हम पवित्र किया जाना की भाषा का इस्तेमाल करें तो आप कह सकते हैं कि यह लोगों को ''पवित्र'' बनाने के लिए थी (देखें लैव्यव्यवस्था 11:44, 45)। रोमियों 8 में पौलुस की शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए हम कह सकते हैं कि यह उसके आत्मा की आज्ञा को मानते हुए चलकर (जीकर) आयत 4 ''परमेश्वर को प्रसन्न'' (रोमियों 8:8) करना है।

ईश्वरीय उद्देश्य: इसे पूरा कैसे करें

''व्यवस्था की विधि'' को कैसे पूरा किया जा सकता है? उसने कहा कि इसे हम में पूरा किया जा सकता है, ''जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं'' (आयत 4क, ख)। ''चलते'' जीवन के ढंग को कहा गया है (देखें 6:4)। संसार के कुछ भागों में इसी विचार को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द ''जीवन शैली'' है। 7:14-25 में पौलुस ''शरीर के अनुसार चलना'' चाहता नहीं था परन्तु वह चला। परन्तु अब वह बदल गया था ज़्योंकि अब वह ''आत्मा के अनुसार'' चल सकता था (आयत 4ग)।

अंग्रेज़ी बाइबल में पूरे अध्याय 8 में इस बात पर आम अनिश्चितता है कि आत्मा के लिए ''spirit'' शब्द का ''s'' बड़ा लिखा जाना चाहिए। यह पवित्र आत्मा (आत्मा के लिए बड़ा ''S'') के लिए कब और मानवीय आत्मा (आत्मा के लिए अंग्रेज़ी शब्द का छोटा ''s'') होता है? अध्याय में अनुवादकों तथा टीकाकारों द्वारा बड़ा ''S'' और छोटा ''s'' के अलग-अलग

इस्तेमाल हैं। आयत 4 में आत्मा के लिए "spirit" में छोटा "S" इस्तेमाल किया जा सकता है। तब आयत का अर्थ *शारीरिक* स्तर के बजाय *आत्मिक* स्तर पर जीने के लिए होगा। पवित्र आत्मा के काम पर अध्याय में दिए जाने वाले जोर के प्रकाशन, सज़्भवतया NASB की तरह "spirit" में बड़ा "s" इस्तेमाल करना सबसे अच्छा होगा।

"[पवित्र] आत्मा के अनुसार" चलने का अर्थ वह करना है, जो पवित्र आत्मा हम से करवाना चाहता है। कई लोग "आत्मा में *बोलने*" का दावा करते हैं, परन्तु पौलुस की चुनौती "आत्मा के अनुसार *चलने*" की है। अगले पाठ में हम चर्चा करेंगे कि मसीही लोग आज "आत्मा के चलाए" *कैसे* चलते हैं (आयत 14)। अभी के लिए हम केवल यही ध्यान देते हैं कि यह जानने का कि आत्मा हम से ज़्या करवाना चाहता है एक मात्र *यथार्थ* ढंग उस पुस्तक (अर्थात बाइबल) को पढ़ना और उसका अध्ययन करना है, जिसे लिखने की उसने प्रेरणा दी।

रोमियों 8 का अध्ययन जारी रखते हुए हम देखेंगे कि पौलुस ने परमेश्वर के उपाय के लिए व्यावहारिक उद्देश्य पर ज़ोर दिया। परमेश्वर हम से एक विशेष प्रकार से काम करने की उज़्मीद करता है कि हम "आत्मा के अनुसार चलते हुए" जीवन बिताएं। व्यवस्था/कर्मों के प्रबन्ध के अधीन ऐसा सज़्भव नहीं था (7:14-25); परन्तु अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध में यह सज़्भव है। परमेश्वर के आत्मा की सहायता से हम पवित्र किए हुए जीवन बिता सकते हैं। एक अर्थ में पौलुस ने ज़ोर दिया कि हम ज़्या कर *सकते हैं,* हमें ज़्या करना *चाहिए* (देखें 8:12, 13)।

सारांश

ज़्या आप अपने अतीत को अपने पीछे रखना पसन्द करेंगे? ज़्या आप अपनी सब बातों के लिए क्षमा पाना पसन्द करेंगे? ये तथा और अवसर इस प्रतिज्ञा में लिपटे हुए हैं, जिसका आरज़्भ रोमियों 8 से होता है: "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (आयत 1)।

अब तक रोमियों 8 के अपने अध्ययन में हमने ज़्या सीखा है? व्यवस्था के अधीन और केवल अपनी ही सामर्थ पर निर्भर पौलुस शरीर की नीचे की ओर खींचने की शज़्ति के सामने बलहीन था; परन्तु परमेश्वर ने अपने पुत्र को पाप को दण्ड देने के लिए शरीर में भेजा। यीशु में विश्वास के द्वारा हम "मसीह में बपतिस्मा" लेते हैं (6:3), जहां "अब से दण्ड की आज्ञा नहीं" (8:1)। जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो परमेश्वर हमें अपना आत्मा देता है (प्रेरितों 2:38; 5:32)। आत्मा के द्वारा हम शरीर के नीचे की ओर खींचने का सामना कर सकते हैं। ज़्या यह अपने आप हो जाता है? नहीं। हमें अपने आपको आत्मा के अनुसार चलने (जीने) के लिए देना आवश्यक है, न कि शरीर के अनुसार देने के लिए।

"दण्ड की आज्ञा नहीं" की प्रभु की प्रतिज्ञा कितनी शानदार है! उस प्रतिज्ञा का पूरा होना केवल उन्हीं के लिए है, जो "मसीह में" हैं और जो "आत्मा के चलाए चलते" हैं। अन्त में मैं आपसे दो सवाल पूछता हूं। ज़्या आपने मसीह में बपतिस्मा ले लिया है? यदि हां तो ज़्या आप वैसे चल रहे (जी रहे) हैं जैसे आत्मा चाहता है कि आपको जीना चाहिए? यदि आप इन प्रश्नों के उज़र हां में नहीं दे सकते, तो मैं आपसे अपनी आत्मिक आवश्यकताओं की चिंता करने के लिए कहूंगा ताकि आपको स्वर्गीय आशिषें और रोमियों 8 की प्रतिज्ञाएं मिल सकें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ में रोमियों 8 की पहली चार आयतों पर बात की गई है। यदि आप पाठ में और वचनों को मिलाना चाहें तो आप 5 से 8 आयतें भी मिला सकते हैं। आपके पाठ के मुख्य शीर्षक ''वह आश्वासन जिसके हम योग्य नहीं हैं'' (आयतें 1-4) और ''वे विकल्प जिनसे हम बच नहीं सकते'' (आयतें 5-8)।

आप चाहें तो रोमियों 8 का पूरा अध्ययन कर सकते हैं। कोय रोपर ने ''मोर दैन कंकरर्स'' नाम से इस पूरे अध्याय पर एक वचन दिया।[29] जे. लोज़्हार्ट ने ''मसीह में होने की आशिषें'' नामक शीर्षक सुझाया।[30] यदि आप अपनी ज़्लास में लॉज़्हार्ट का ढंग अपनाते हैं तो आपको चाहिए कि ज़्लास के लोगों को इस अध्याय में मिलने वाली आशिषों की सूची बनाने के लिए कहें।[31] रोमियों 8 पर पाठ का एक और सज़्भावित शीर्षक ''जीवन नये आयाम में'' है।[32]

टिप्पणियां

[1]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 299. [2]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 216. [3]आर. सी. बेल्ल; जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैज़्सस: स्वीट पज़्लिशिंग कं, 1965), 68 में उद्धृत। [4]मौरिस, 300; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर एर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्डंट एण्ड एफ. विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1957), 413. [5]कोय रोपर, ''मोर दैन कंकरर्स,'' *टुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी संस्क.: अगस्त 1988): 12. [6]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 151. [7]ग्लेन पेस, जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जुडसोनिया आरकैंसा, 30 मार्च, 2003 को दिया गया प्रवचन। [8]हाफर्ड ई. लज़्कॉक, *प्रीचिंग वेल्यूस इन द एपिस्टल ऑफ़ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यूयार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 51. [9]रोमियों 8 में अपने कुछ उपयोगों में, ''if'' का अर्थ ''ज़्योंकि'' है; परन्तु उनमें से कई उपयोगों में ''if'' शब्द केवल उस स्थिति को व्यज़्त करता है जिसका सामना करना आवश्यक है। [10]इन तीन स्थितियों की विस्तृत चर्चा के लिए, देखें डेविड रोपर, *जीज़स क्राइस्ट एण्ड हिम क्रूसिफाइड* (अरवदा, कोलोराडो: क्रिश्चियन कज़्युनिकेशंस, 1976), 89-96.

[11]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (गैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 258. [12]वही। [13]कई प्राचीन हस्तलेखों में रोमियों 8:2 में *me* (''मुझे'') के बजाय *se* (''तुज़्हें'') है। KJV, NIV, RSV तथा अन्य संस्करणों में ''मुझे'' ही है। यह आयत को सीधे 7:14-25 से जोड़ देगा। [14]कुछ लेखक इसे ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' को इस प्रकार व्यज़्त करते हैं: ''यदि तुम पाप करो, तो तुम मरते हो!'' कई प्रतिष्ठित विद्वानों का यह मत है कि ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' मूसा की व्यवस्था को कहा गया है। इसे पौलुस में कार्यरत ''व्यवस्था'' के रूप में विचार करना बेहतर लगता है जब तक वह व्यवस्था/कर्मों के प्रबन्ध के *अधीन* था। [15]स्टॉट, 218. जिम मैज़्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू दि बाइबल सीरीज़ (लज़्बॉक, टैज़्सस: मोंटैज़्स पज़्लिशिंग कं., 1982), 231 इस व्याज़्या को आम तौर पर मूसा की व्यवस्था के रूप में ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' के परिचय से जोड़ा जाता है। [16]यदि ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' मूसा की व्यवस्था थी, तो पौलुस कह रहा था कि मूसा की व्यवस्था उसे मूसा की व्यवस्था से स्वतन्त्र नहीं कर सकती थी जो कि असज़्भव लगता है। [17]ये कुछ सुझाए गए उदाहरण हैं। ऐसे उदाहरण का इस्तेमाल करें जो आपके सुनने वालों को अच्छी तरह समझ आता हो। [18]डेव मिल्लर, *टुथ इन लव* टेलीविज़न कार्यक्रम, फोर्ट वर्थ, टैज़्सस, 2 फरवरी, 2002 में दिया गया प्रवचन। [19]मू, 249. [20]''परमेश्वर

ने कोई परोक्ष दूत नहीं भेजा बल्कि अपने साथ विलक्षण सञ्बन्ध में खड़ा होने वाले अपने पुत्र को भेजा'' (मौरिस, 302)।

[21]''Docetic'' का अनुवाद यूनानी शञ्द *dokeo* (''प्रतीत होना'') से किया गया है। निराकारवाद भ्रमित नास्तिक विश्वास था कि यीशु की वास्तविक मानवीय देह नहीं थी, बल्कि केवल शरीर *लगता था*। [22]ब्रूस, 152. [23]मैञ्गुइगन, 233. [24]ब्रायन चैप्पल, *इन द ग्रिप ऑफ़ ग्रेस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिगिशन: बेकर बुक हाउस, 1992), 23. [25]चार्ल्स स्पर्जन, *स्पर्जन'स कमैंट्री ऑन ग्रेट चैप्टर ऑफ़ द बाइबल,* संक., टॉम कार्टर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पञ्लिकेशंस, 1998), 258. [26]डञ्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कञ्पलीट एञ्पोजिस्टरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पञ्लिशर्स, 1985), 339. [27]एक और सञ्भावित व्याञ्या यह है कि यह आयत पुरानी वाचा (पुराना नियम) को पूरा करते हुए मसीह की मृत्यु के सञ्बन्ध में है ताकि इसे उठा लिया जाए। परन्तु रोमियों 8:4 के अन्त के प्रकाश में ऊपर दी गई व्याञ्या सबसे सही लगती है। [28]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन टैञ्सस: स्वीट पञ्लिशिंग कं., 1965), 56. [29]कोय रोपर, ''मोर दैन कंकरर्स,'' *ट्रुथ ञ़ॉर टुडे* (अगस्त 1988): 11–14. [30]जे लॉकहार्ट, ''इन क्राइस्ट: नो कंडेञ्नेशन,'' *ट्रुथ ञ़ॉर टुडे* (अञ्टूबर 1986): 26.

[31]एक सूची जिञ्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 75 में दी गई है। [32]जिम हिल्टन, *जस्ट डाइंग टू लिव* (कलामजू, मिशिगन: मास्टर'स प्रैस, 1976), 93.